क्षितिज

भाग 2

कक्षा 10 'अ' पाठ्यक्रम के लिए
हिंदी की पाठ्यपुस्तक

1055

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

© NCERT not to be republished

प्रथम संस्करण

जनवरी 2007	माघ 1928

पुनर्मुद्रण

नवंबर 2007	कार्तिक 1929
फरवरी 2009	माघ 1930
दिसंबर 2009	पौष 1931
नवंबर 2010	कार्तिक 1932
जनवरी 2012	माघ 1933
नवंबर 2012	कार्तिक 1934
दिसंबर 2013	पौष 1935
नवंबर 2014	अग्रहायण 1936
दिसंबर 2015	पौष 1937
दिसंबर 2016	पौष 1938
दिसंबर 2017	अग्रहायण 1939
दिसंबर 2018	अग्रहायण 1940
सितंबर 2019	भाद्रपद 1941

PD 360T RSP

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2007

₹ 70.00

एन.सी.ई.आर.टी वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पेलिकन प्रेस, सी-118, मायापुरी औद्योगिक क्षेत्र, फेज़-II, नयी दिल्ली 110 064 द्वारा मुद्रित।

ISBN 81-7450-656-X

सर्वाधिकार सुरक्षित

- ❑ प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलैक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- ❑ इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- ❑ इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III स्टेज
बेंगलुरु 560 085 फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगांव
गुवाहाटी 781021 फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	: *एम. सिराज अनवर*
मुख्य संपादक	: *श्वेता उप्पल*
मुख्य उत्पादन अधिकारी	: *अरुण चितकारा*
मुख्य व्यापार प्रबंधक	: *बिबाष कुमार दास*
संपादक	: *नरेश यादव*
उत्पादन सहायक	: *राजेश पिप्पल*

आवरण एवं चित्र
अरविंदर चावला

छविचित्र
निधि वाधवा

© NCERT not to be republished

आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। यह सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नयी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने का प्रयास हैं। इस प्रयास में हर विषय को एक मज़बूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल-केंद्रित व्यवस्था की दिशा में काफ़ी दूर तक ले जाएँगे।

इस प्रयत्न की सफलता अब इस बात पर निर्भर है कि स्कूलों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और सीखने के दौरान अपने अनुभवों पर विचार करने का कितना अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह, समय और आज़ादी दी जाए तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गई सूचना-सामग्री से जुड़कर और जूझकर नए ज्ञान का सृजन करते हैं। शिक्षा के विविध साधनों एवं स्रोतों की अनदेखी किए जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सर्जना और पहल को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और बनाएँ, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक का ग्राहक मानना छोड़ दें।

ये उद्देश्य स्कूल की दैनिक ज़िंदगी और कार्यशैली में काफ़ी फेरबदल की माँग करते हैं। दैनिक समय-सारणी में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है जितना वार्षिक कैलेंडर के अमल में चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिए नियत दिनों की संख्या हकीकत बन सके। शिक्षण और मूल्यांकन की विधियाँ भी इस बात को तय करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक स्कूल में बच्चों के जीवन को मानसिक दबाव तथा बोरियत की जगह खुशी का अनुभव बनाने में कितनी प्रभावी सिद्ध होती है। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का पुनर्निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवं अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। इस कोशिश को और

© NCERT not to be republished

गहराने के यत्न में यह पाठ्यपुस्तक सोच-विचार और विस्मय, छोटे समूहों में बातचीत एवं बहस, और हाथ से की जाने वाली गतिविधियों को प्राथमिकता देती है।

एन.सी.ई.आर.टी. इस पुस्तक की रचना के लिए बनाई गई पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है। परिषद् भाषा सलाहकार समिति के अध्यक्ष प्रो. नामवर सिंह और इस पुस्तक के मुख्य सलाहकार प्रो. पुरुषोत्तम अग्रवाल की विशेष आभारी है। इस पाठ्यपुस्तक के विकास में कई शिक्षकों ने योगदान किया; इस योगदान को संभव बनाने के लिए हम उनके प्राचार्यों के आभारी हैं। हम उन सभी संस्थाओं और संगठनों के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री तथा सहयोगियों की मदद लेने में हमें उदारतापूर्वक सहयोग दिया। हम माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रोफ़ेसर मृणाल मीरी एवं प्रोफ़ेसर जी.पी. देशपांडे की अध्यक्षता में गठित निगरानी समिति (मॉनिटरिंग कमेटी) के सदस्यों को अपना मूल्यवान समय और सहयोग देने के लिए धन्यवाद देते हैं। व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों में निरंतर निखार लाने के प्रति समर्पित एन.सी.ई.आर.टी टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करेगी जिनसे भावी संशोधनों में मदद ली जा सके।

निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्

नयी दिल्ली
20 नवंबर 2006

© NCERT not to be republished

यह पुस्तक

दसवीं कक्षा के लिए हिंदी के 'अ' पाठ्यक्रम की पाठ्यपुस्तक **क्षितिज** भाग 2 आपके सामने है। इस संकलन में सत्रह रचनाकारों की रचनाएँ शामिल हैं जिनमें आठ गद्य रचनाएँ और नौ कवियों की कविताएँ हैं। कविताओं को ऐतिहासिक कालक्रम के अनुसार रखा गया है। उद्देश्य यह रहा है कि भक्तिकाल, रीतिकाल और आधुनिक काल की विभिन्न प्रवृत्तियों का प्रतिनिधित्व करने वाले कवियों की कविताओं के माध्यम से विद्यार्थी हिंदी कविता की विकास-यात्रा से परिचित हो सकें।

विद्यार्थियों को हिंदी की प्रमुख गद्य विधाओं और शैलियों का परिचय कराने के लिए विचारात्मक और व्यंग्यात्मक निबंधों के साथ कहानी, संस्मरण, रेखाचित्र, आत्मकथा आदि विधाओं को शामिल किया गया है। विधा के अतिरिक्त विषय, भाषा शैली की विविधता, सरसता और रोचकता का भी पूरा ध्यान रखा गया है। गद्य पाठों का संयोजन न तो काल क्रम से किया गया है और न ही विधावार बल्कि उनके समायोजन का मुख्य आधार है सरलता से कठिनता की ओर। प्रसिद्ध लेखकों के साथ कुछ नए लेखकों और शैलियों का समावेश इस उद्देश्य से किया गया है कि विद्यार्थियों को कुछ नयी पाठ्य-सामग्री पढ़ने को मिल सके। हमारा प्रयत्न रहा है कि हिंदी साहित्य की समृद्धि और शक्ति दोनों की एक झलक हमारे किशोर पाठकों को मिले।

पाठ्यपुस्तक पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रम का मूर्त रूप होती है जिसमें पाठ्यक्रम के उद्देश्य बहुत बारीकी से पिरोए जाते हैं। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में जिन बिंदुओं की ओर विशेष रूप से ध्यान आकर्षित किया गया है उन बिंदुओं को इस पाठ्यपुस्तक में रचनात्मक रूप से समाहित करने की कोशिश की गई है। शिक्षकों और विद्यार्थियों द्वारा पाठ्यपुस्तक के दक्षतापूर्ण उपयोग पर ही उसकी संपूर्णता निर्भर करती है। वर्तमान समय में शिक्षा का शास्त्र और व्यवहार विद्यार्थियों की सहभागिता को ही दक्षता का पर्याय मानता है इसलिए विद्यार्थियों को केंद्र में रखकर ही इस पुस्तक का ताना-बाना बुना गया है। अतः शिक्षकों द्वारा पाठ्यपुस्तक का दक्षतापूर्ण उपयोग भी तभी संभव है जब उनकी तमाम शिक्षण तकनीकों के केंद्र में विद्यार्थी हों। इस दृष्टि से शिक्षक की भूमिका किसी उपदेशक या एकतरफ़ा ज्ञान प्रदान करने वाले के रूप में नहीं हो सकती।

© NCERT not to be republished

पाठ्यपुस्तक की सामग्री का रचनात्मक उपयोग करने के लिए उसे एक प्रेरक की भूमिका निभानी पड़ेगी। विद्यार्थियों के किशोर मानस को ध्यान में रखकर शिक्षक को अपने तमाम शिक्षण कार्य के दौरान भाषा और साहित्य के अध्ययन–अध्यापन की चली आती परंपरागत पद्धतियों से आगे जाना पड़ेगा ताकि विद्यार्थी आधुनिक जीवन के परिवेश, समकालीन यथार्थ और दिन–प्रतिदिन के बदलते जीवन की चुनौतियों के बीच मानव मूल्यों के प्रति अडिग आस्था बनाए रखने की प्रेरणा प्राप्त कर सकें।

पाठगत बाधाओं को दूर करते हुए विद्यार्थियों की सहभागिता को सही दिशा प्रदान करने का काम शिक्षक ही कर सकता है। शिक्षक पाठ पढ़ाने के साथ पुस्तक में निर्देशित शैक्षिक गतिविधियों को कराते हुए विद्यार्थियों की भाषिक कुशलताओं को बढ़ाता है और जीवन–जगत के संबंध में उनके अनुभव क्षेत्र का विस्तार करता है। विद्यार्थियों को अपनी सांस्कृतिक धरोहर से जोड़ने का काम भी भाषा और साहित्य की शिक्षा ही करती है इसलिए भारत के बहुभाषी परिवेश को शिक्षक को अपनी शिक्षण पद्धति का हिस्सा बनाना होगा और उसे एक संसाधन के रूप में शामिल करना होगा। साझी संस्कृति, सामाजिक दृष्टि से उपेक्षित समाज, बालिकाओं के प्रति पूर्वग्रह मुक्त दृष्टिकोण, शारीरिक रूप से चुनौतीपूर्ण वर्ग और पर्यावरण एवं शांति जैसे संवेदनशील मुद्दे शिक्षकों से सकारात्मक व्यवहार की माँग करते हैं।

हम सभी जानते हैं कि शिक्षण की कोई एक विधि नहीं होती। हर शिक्षक अपने ढंग से पढ़ता–पढ़ाता है परंतु मौलिकता और सृजनात्मकता द्वारा शिक्षण को रुचिकर बनाया जा सकता है। सहायक सामग्री (संदर्भ से जुड़ी नयी पुस्तकें, पत्र–पत्रिकाएँ, ऑडियो–वीडियो कैसेट, सीडी या चित्र आदि) का उपयोग करते हुए शिक्षण को एकरसता और यांत्रिकता से बचाया जा सकता है। शिक्षक अपने कक्षा अध्यापन को इस तरह व्यवस्थित करें कि विद्यार्थियों को भाषा शिक्षण के सभी कौशलों के विकास का समुचित अवसर मिले। साथ ही विद्यार्थियों के भीतर जो कल्पनाशीलता, विस्मय, कौतुहल, जिज्ञासा एवं सृजनात्मकता है उन्हें विकसित किया जा सके।

भाषा और साहित्य का शिक्षण उसकी अनेक विधाओं के माध्यम से होता है। कविता साहित्य के दूसरे रूपों की तुलना में सबसे पुरानी विधा है इसलिए पुस्तक में कविताएँ गद्य से पहले रखी गई हैं। कविता अपनी वाक्य संरचना, शब्दों की स्थिति एवं लय के कारण गद्य से भिन्न होती है। गद्य की भाषा हमारे दैनिक व्यवहार की भाषा के निकट होती है और उसमें विचार प्रधान होता है जबकि कविता की भाषा सामान्यत: संकेतात्मक होती है। उसमें छंद, लय, तुक, अलंकार, बिंब, प्रतीक आदि का विशेष महत्त्व होता है। हम कह सकते हैं कि कविता जीवन अनुभवों की कलात्मक अभिव्यक्ति है। वह मनुष्य के भावजगत का विस्तार करती है। उसकी कल्पना शक्ति को जगाती है और सौंदर्यबोध का विकास करती है।

© NCERT not to be republished

हम जानते हैं साहित्य की कोई अकेली समझ नहीं होती है और समझने–समझाने के कोई पूर्व निर्धारित उपाय भी नहीं होते। विशेष रूप से कविता का कथ्य साझेदारी के बिना पूरी तरह समझ में नहीं आ सकता। कविता का अर्थ खंडों में नहीं समग्र प्रभाव के रूप में ही ग्रहण किया जाता है। शिक्षण में यह भी ध्यान रखना ज़रूरी है कि कविताओं का कोई एक निश्चित अर्थ नहीं होता है इसीलिए विद्यार्थियों को कल्पना करने की पूरी छूट देनी चाहिए।

सभी काल की कविताओं को एक ही पद्धति से नहीं पढ़ाया जा सकता। मध्यकालीन कविताओं में अलंकार, छंद विधान, तुक आदि के प्रति विशेष आग्रह रहा है जबकि आज की कविता में लय और प्रवाह का महत्त्व है, परंपरागत छंद और तुक आदि का नहीं। शिक्षकों को यह भी ध्यान में रखना होगा कि कवि की काव्य–संवेदना के निर्माण में उसके युग और परिवेश का हाथ होता है इसलिए कविता पढ़ाते समय कवि की युग चेतना का बोध और अपने समय के प्रति सजगता दोनों आवश्यक हैं। तभी आज के समय में उस कविता की प्रासंगिकता को ठीक से समझा जा सकता है।

कविता के आदर्श और सस्वर वाचन से कविता को समझने और उसके भावग्रहण में सहायता मिलती है। संभव हो तो विद्यार्थियों का रचनाकारों से साक्षात्कार कराया जाए। कवियों को बुलाकर उनके कविता पाठ का आयोजन भी किया जा सकता है। भक्तिकालीन कविताओं की संगीतात्मक प्रस्तुति के ऑडियो कैसेट या सीडी उपलब्ध हों तो उसे भी सुनवाएँ। समय–समय पर शैक्षणिक भ्रमण और यात्राओं का आयोजन भी किया जाना चाहिए।

गद्य विधाओं की भी अपनी विशेष संरचना होती है और प्रत्येक विधा को पढ़ने–पढ़ाने की विशिष्ट विधियाँ होती हैं। किसी विधा विशेष की रचना पढ़ाते समय उसकी मूल विशेषता की ओर अवश्य ध्यान देना चाहिए। उदाहरण के लिए निबंध शिक्षण में अर्थ ग्रहण की योग्यता विकसित करना और भाषा के अभिव्यक्ति कौशल से विद्यार्थियों को परिचित कराना अपेक्षित है। निबंध में लेखक के दृष्टिकोण का और उसकी भाषा–शैली का विशेष महत्त्व होता है। उसी प्रकार विद्यार्थियों की कल्पना, उत्सुकता एवं जिज्ञासा के विस्तार के लिए कहानी पढ़ाई जाती है। हम सभी जानते हैं कि एक कहानी में कई कहानियाँ छुपी रहती हैं। शिक्षकों को ऐसे मोड़ों या बिंदुओं को खोजना होगा जहाँ से कहानी किसी भी दिशा में जा सकती है। ऐसी स्थिति से आगे की कल्पना करने (लिखित या मौखिक) के लिए छात्र–छात्राओं को कहा जा सकता है। साथ ही कहानी के अंतर्गत कई दृश्य–चित्र एवं शिक्षण बिंदु होते हैं। शिक्षकों को इन दृश्य–चित्रों एवं शिक्षण बिंदुओं का अभ्यास कार्य द्वारा या किसी अन्य विधि से रचनात्मक उपयोग करना चाहिए, तभी कहानी वस्तु एवं शिल्प दोनों रूपों में विद्यार्थियों के ज्ञान का हिस्सा बन पाएगी। कहानी शिक्षण के दौरान शिक्षक प्रायोगिक रूप से कहानी को नाटक में परिवर्तित करने की प्रक्रिया का प्रारंभ भी कर सकते हैं। संस्मरण,

© NCERT not to be republished

जीवनी और आत्मकथा द्वारा युग विशेष की परिस्थितियों के आकलन के साथ-साथ वैयक्तिक गुणों, क्षमताओं और अनुकूल या प्रतिकूल स्थितियों की चर्चा इस तरह की जाए कि विद्यार्थियों को उनके व्यक्तित्व के विकास में सहायता मिल सके। इस प्रकार विभिन्न साहित्यिक विधाओं के लक्षणों और विशेषताओं को जानकर उनके अध्ययन-अध्यापन को सुगम बनाया जा सकता है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या सन् 2005 में ज्ञान को स्कूल के बाहरी जीवन से जोड़ने की बात कही गई है। शिक्षा केवल पाठ्यपुस्तक केंद्रित ही न हो बल्कि उससे विद्यार्थी का चहुँमुखी विकास हो और रटंत प्रणाली से मुक्ति मिले। मूल्यांकन को सीखने की प्रक्रिया मानते हुए उसे कक्षा की गतिविधियों से जोड़ने की सिफ़ारिश भी की गई है। इन सब बातों को देखते हुए शिक्षक का दायित्व और बढ़ जाता है कि वह विद्यार्थियों की उपलब्धियों को किस प्रकार आँकता है। प्राय: यह देखा गया है कि शिक्षक प्रश्नों के उत्तर का एक ढाँचा निर्मित कर लेता है और उससे अलग प्रकार के उत्तर की अपेक्षा वह विद्यार्थियों से नहीं करता। भाषा और साहित्य के प्रश्न बँधे-बँधाए उत्तरों तक सीमित नहीं हो सकते, उनमें तर्क, खोजबीन और अपनी तरह से अर्थ ग्रहण करने की असीमित संभावनाएँ होती हैं। शिक्षक को उदारता दिखाते हुए विद्यार्थियों के उत्तर स्वीकार करने चाहिए। वह अवलोकन, समूह कार्य, वाचन, पठन, संवाद, मौखिक-लिखित अभिव्यक्ति आदि को मूल्यांकन की प्रक्रिया से जोड़े। प्रस्तुत पुस्तक के प्रश्न-अभ्यासों में स्मृति की क्षमता का परीक्षण करने वाले प्रश्नों को नकारा गया है। उनमें एक खुलापन है और चुनौती भी। अत: शिक्षकों से अपेक्षा रहेगी कि वे भी पूर्वग्रह से मुक्त होकर अपने शिक्षण में एक खुलापन लाएँ।

© NCERT not to be republished

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष, भाषा सलाहकार समिति

नामवर सिंह, *पूर्व अध्यक्ष,* भारतीय भाषा केंद्र, जे.एन.यू., नयी दिल्ली।

मुख्य सलाहकार

पुरुषोत्तम अग्रवाल, *पूर्व प्रोफ़ेसर,* भारतीय भाषा केंद्र, जे.एन.यू., नयी दिल्ली।

मुख्य समन्वयक

रामजन्म शर्मा, *पूर्व प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष,* भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।

सदस्य

अनिता वैष्णव, *पी.जी.टी.* (हिंदी), दिल्ली पब्लिक स्कूल, वसंत कुंज, नयी दिल्ली।

अनुराधा, *पी.जी.टी.* (हिंदी), सरदार पटेल विद्यालय, लोधी एस्टेट, नयी दिल्ली।

दिविक रमेश, *प्राचार्य,* मोतीलाल नेहरू कॉलेज, नयी दिल्ली।

दुर्गा प्रसाद गुप्ता, *रीडर,* हिंदी विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नयी दिल्ली।

निरंजन देव, *प्राचार्य,* भारत-भारती स्कूल, ढालपुर, कुल्लू, हिमाचल प्रदेश।

निरंजन सहाय, *प्रवक्ता* (हिंदी), पं. उदय जैन महाविद्यालय, कानोड़ ज़िला, उदयपुर।

माधवी कुमार, *रीडर,* सी.आई.ई.टी., एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।

वीरेंद्र सिंह रावत, *फ़ील्ड ऑफ़िसर,* शिक्षा विभाग, केंद्रीय शिक्षा संस्थान, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।

शारदा कुमारी, *प्रवक्ता,* डाइट, आर.के.पुरम, नयी दिल्ली।

हिमांशु पंड्या, *प्रवक्ता* (हिंदी), भूपाल नोबल्स स्नातकोत्तर महाविद्यालय, उदयपुर।

सदस्य समन्वयक

चन्द्रा सदायत, *प्रोफ़ेसर,* भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।

© NCERT not to be republished

आभार

इस पुस्तक के निर्माण में अकादमिक सहयोग के लिए परिषद् शंभुनाथ, *निदेशक,* केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा; कमल कुमार, *रीडर* (हिंदी), जीसस एंड मेरी कॉलेज, नयी दिल्ली; रामबक्ष, *प्रोफेसर* (हिंदी), इग्नू, नयी दिल्ली; नीलकंठ कुमार, *पी.जी.टी.* (हिंदी), राजकीय बाल विद्यालय न. 1, पालम गाँव की आभारी है।

परिषद् रचनाकारों, रचनाकारों के परिजनों, संस्थानों, प्रकाशकों के प्रति आभारी है जिन्होंने रचनाओं को प्रकाशित करने की अनुमति प्रदान की।

पुस्तक निर्माण संबंधी कार्यों में तकनीकी सहयोग के लिए परिषद् *कंप्यूटर स्टेशन इंचार्ज* (भाषा विभाग) परशराम कौशिक; *डी.टी.पी. ऑपरेटर* सचिन कुमार; *कॉपी एडिटर* वरुणा मित्तल, अंजना बख्शी, अवध किशोर सिंह एवं प्रूफ रीडर *दुर्गा देवी* की आभारी है।

© NCERT not to be republished

विषय-क्रम

आमुख *iii*

यह पुस्तक *v*

काव्य खंड

1. **सूरदास** **3**
ऊधौ, तुम हौ अति बड़भागी
मन की मन ही माँझ रही
हमारैं हरि हारिल की लकरी
हरि हैं राजनीति पढ़ि आए

2. **तुलसीदास** **10**
राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद

3. **देव** **19**
पाँयनि नूपुर...
डार द्रुम पलना...
फटिक सिलानि...

4. **जयशंकर प्रसाद** **26**
आत्मकथ्य

5. **सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'** **31**
उत्साह
अट नहीं रही है

6. **नागार्जुन** **37**
यह दंतुरित मुसकान
फसल

7. **गिरिजाकुमार माथुर** **44**
छाया मत छूना

8. **ऋतुराज** **49**
कन्यादान

9. **मंगलेश डबराल** **52**
संगतकार

© NCERT not to be republished

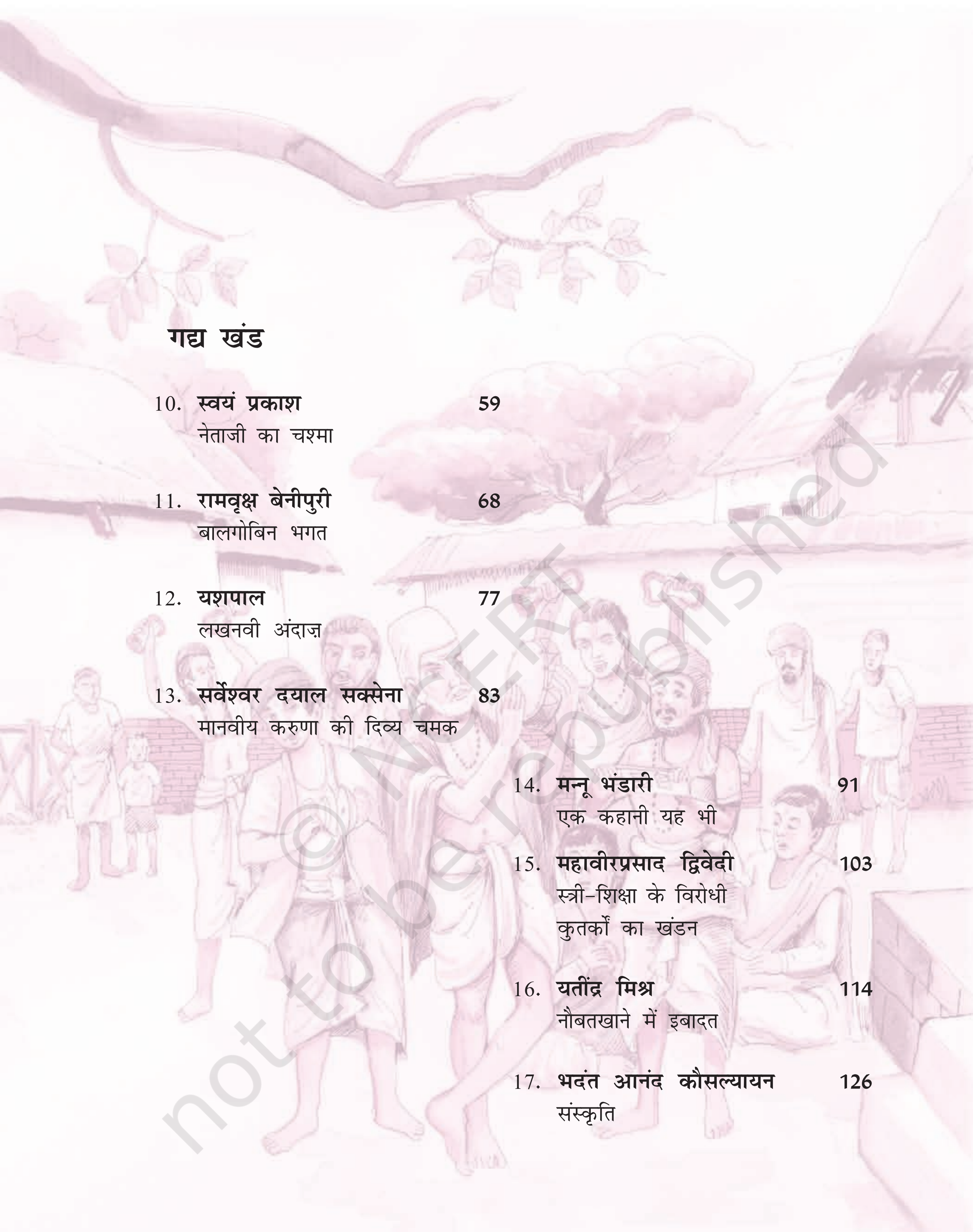

गद्य खंड

10. **स्वयं प्रकाश** 59
नेताजी का चश्मा

11. **रामवृक्ष बेनीपुरी** 68
बालगोबिन भगत

12. **यशपाल** 77
लखनवी अंदाज़

13. **सर्वेश्वर दयाल सक्सेना** 83
मानवीय करुणा की दिव्य चमक

14. **मन्नू भंडारी** 91
एक कहानी यह भी

15. **महावीरप्रसाद द्विवेदी** 103
स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन

16. **यतींद्र मिश्र** 114
नौबतखाने में इबादत

17. **भदंत आनंद कौसल्यायन** 126
संस्कृति

© NCERT not to be republished